Hkkjrh; LorU=rk lxke ¼1857&1859½

महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह का योगदान

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

Hkkjrh; LorU=rk lxzke ¼1857&1859½

महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह का योगदान

डॉ. रीता सिंह राठौर

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

}kjk izdkf'kr

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

Hkkjrh; LorU=rk lxzke ¼1857&1859½
महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह का योगदान

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-84-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

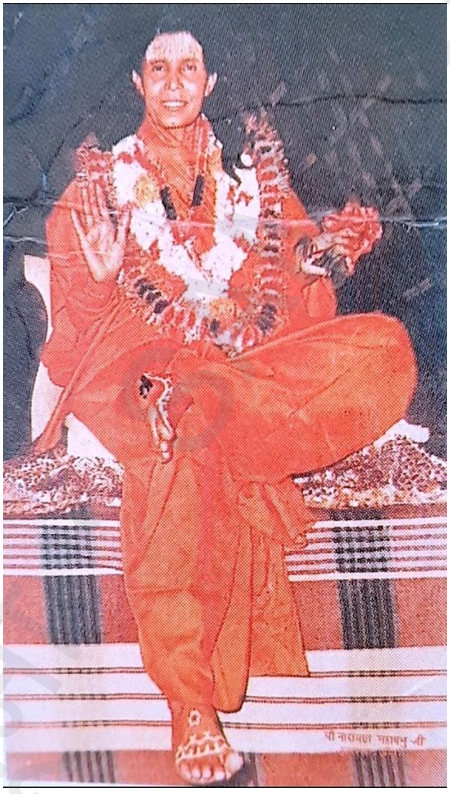
इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

Hkkjr esa izdkf'kr

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

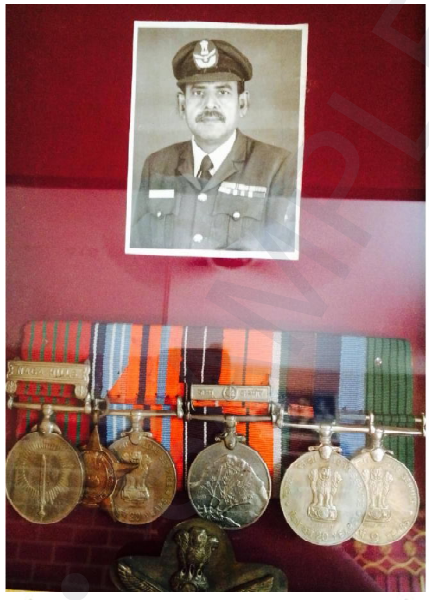
SAMPLE

समर्पण



श्री नारायण महाप्रभु शिवकुटी इलाहाबाद के चरणो में कोटि कोटिवंदन।

नमूना • SAMPLE



पूज्यनीय पिताजी श्री (स्वर्गीय)
बजरंग फतेह बहादुर सिंह
(वारंट ऑफिसर – भारतीय वायु सेना)
को समर्पित।

28 अप्रैल 1943 – 11 जून 2016

यह मेरा सौभाग्य रहा, कि ईश्वर ने पिता के रूप में आपको मेरी जिंदगी में भेजा आप के विषय में कुछ लिख सकूं, ऐसी लेखनी अभी बनी नहीं है। एक बेटी का शिक्षा जगत की सबसे बड़ी डिग्री पाने के सपने को पूरा करने के सफर में आप का समर्पण साथ लगन सब कुछ

अकथनीय है। यह पल बहुत खूबसूरत होता, यदि आज आप मेरे साथ होते, किंतु ईश्वर की मर्जी और नियत के आगे कुछ भी नहीं है। खुशनसीब होते हैं, वह बेटियां जिनके पिता आपके जैसे होते हैं। जिनकी नजरों में बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं था। वक्त के उस दौर में और उन सामाजिक बंधनों के वक्त सब कुछ भूल कर जिस तरह आप हर पल मेरे साथ रहे, वह सब जीवन भर मेरे मन और मस्तिष्क में रहेगा। जीवन भर ये कोशिश रहेगी, मेरा हर कदम ऐसा हो जिससे आप जहां कहीं भी हैं, गर्व महसूस कर सकें और मुझे प्रेरणा और आशीर्वाद देते रहे। जीवन का वह बेहद कठिन दौर था, किस संघर्ष से भरा हुआ था, राह में कांटे ज्यादा थे, किंतु आपके साथ में उस वक्त यह सब महसूस ही नहीं होने दिया। शायद इसीलिए पिता को बरगद की छांव कहते हैं, कि जीवन की धूप महसूस ही नहीं होती, ईश्वर करें हर जन्म में हमारा और आपका रिश्ता बना रहे।



स्वर्गीय श्री (डॉ.) शमशेर सिंह भदोरिया

डॉक्टर स्वर्गीय श्री शमशेर सिंह भदोरिया सर्वप्रथम आपने महाराजा चंद्रिका बक्स सिंह को सामाजिक रूप से लोगों को इनका परिचय दिया, एवं इनके योगदानओं से रूबरू कराया। यहां तक कि महाराजा की स्टेट बेथर मैं महाराजा जी के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की। जिसका संचालन उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक किया। सर्वप्रथम आपने ही इस विषय पर पुस्तक लिखने के लिए मुझे प्रेरित किया।

आपको अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी महाराजा साहब का नाम आपकी जुबान पर था। और जो कार्य अधूरा रह गया था, वह आज पूरा हो रहा है। आपका सपना था कि महाराजा जी के जीवन पर पुस्तक जरूर लिखी जाए, ताकि लोग उनके बलिदान को जान सके। किंतु दुख की बात यह है कि आज आप हम सबके बीच में नहीं है। (11 jan 2019) को आप इस जीवन रूपी यात्रा का समापन करके एक दूसरी यात्रा में निकल पड़े ईश्वर आप को शांति दे!

नमूना • SAMPLE



डॉ. आलोक कुमार सिंह

निर्देशक

रीडर (इतिहास विभाग)

दयानन्द ब्रजेन्द्र स्वरूप महाविद्यालय,

गोविन्द नगर, कानपुर

एवं

डॉ. (श्रीमती) पूनम सिंह

कहते हैं, कि यदि जीवन में गुरु ना हो तो जीवन की यात्रा अधूरी है। मेरी शिक्षा के सफर में आप मुझे मिले, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। आज के दौर में बेहद भाग्यशाली होंगे, वह विद्यार्थी और शोधार्थी जिन्हें आपके जैसा गुरु और गुरु माँ मिले। आप दोनों का ज्ञान और लेखनी असीम है। यदि इस विषय में आप मेरे साथ नहीं होते, तो यह यात्रा सफल बिल्कुल नहीं हो सकती थी। क्योंकि यह विषय इतना अनूठा था। जिसके विषय में पहले कभी इतिहास विषय में कोई कार्य हुआ ही नहीं। एक नया विषय वह भी कम से कम स्रोतों के साथ जिससे कि रास्ता कठिनाई भरा था, कभी–कभी ना पूरा होने जैसा भी लगता था, लेकिन कहते हैं, ना कि गुरु का ज्ञान और शक्ति असंभव को भी संभव बना देती है। क्योंकि हम दोनों ने यह ठान लिया था, की इस कार्य को बेहद सफलतापूर्वक कम से कम समय में और सबसे अच्छा करके दिखाना है। इस सफर में हमारा साथ आपकी धर्मपत्नी डॉक्टर पूनम सिंह ने बराबर दिया। साथ देने के साथ–साथ आप लोगों का स्नेह एवं अनुराग से भरा हुआ; स्वभाव निस्वार्थ भावना अपने शिष्य को ज्ञान देने के लिए पूरा समर्पण और इन सब से भी ऊपर जो वक्त और ज्ञान आप दोनों ने मुझे दिया, उसके लिए मैं जीवन भर ऋणी रहूंगी।

योगदान

अवध में बैसवारी का स्वतंत्रता संघर्ष भारतीय इतिहास के उन भूले बिसरे पृष्ठों में हैं, जिसका संकलन मेरे शोध कार्य भारत का प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष 1857 से 1859 मैं महाराजा चंद्रिका बक्स सिंह का योगदान मेरे शोध का विषय बना जो कि आज एक पुस्तक के रूप में आपके समक्ष उपस्थित है। अंग्रेजों ने अपनी कुप्रवृति दुर्बुद्धि के साथ भारत में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। परंतु अपने भारत के वीर सपूतों ने अपनी एकता राष्ट्रीयता व सरिता के बूते पूरे राष्ट्र को आंदोलित कर अंग्रेजों की अधीनता को जड़ों से हिला दिया। वास्तव में जब सत प्रवृत्तियां संगठित और एकत्रित हो जाएं, तो दुष्ट प्रवृत्तियों अना चारों और अत्याचारों को जड़ मूल से उखाड़ फेंका जा सकता है।

स्वाधीनता के प्रयास में शहीद हुए इन वीर सपूतों को उनकी शहादत को मैं तहे दिल से वंदना करती हूँ, जिनके अथक प्रयास से हम स्वाधीनता की सांसे ले रहे हैं। महाराजा चंद्रिका बक्सर सिंह उन्हीं वीर सपूतों में से हैं, जो सपरिवार अपनी शहादत देते हुए भी आज भूले बिसरे पृष्ठों तक ही सीमित रह गए, यह मेरा अपने शोध एवं पुस्तक के माध्यम से एक प्रयास है। हिंदुस्तान का प्रत्येक व्यक्ति उनके अतुलनीय योगदान से परिचित हो सकें!

उक्त संदर्भ में मैं महागुरु नारायण महाप्रभु जी के आशीर्वाद से अपने पूज्य गुरुवर डॉक्टर आलोक कुमार सिंह, रीडर इतिहास विभाग डीबीएस कॉलेज गोविंद नगर, कानपुर एवं उनकी पत्नी डॉक्टर पूनम सिंह सरकारी स्कूल कार्यरत है कि कानपुर की आभारी एवं श्रद्धानवत्

SAMPLE

हूँ जिनके विधता पूर्ण एवं कुशल दिशा–निर्देशन में यह कार्य वर्तमान कलेवर को प्राप्त कर सका है। मेरी इस कठिन दुर्गम एवं चुनौतीपूर्ण यात्रा को आपके ही सहयोग ने सरल बनाया आप लोगों ने जो स्नेह एवं सानिध्य प्रदान कर मेरा मनोबल बढ़ाया उसकी मैं आभारी हूँ।

उन्नाव के पूर्व जिलाधिकारी डॉ. ए. के. सिंह जी ने भी इस विषय में समय–समय पर अनेक दस्तावेज उपलब्ध कराने में विशेष रचने करके अपना अमूल्य सराहनीय सहयोग प्रदान कर मुझे अभिभूत किया है, मैं राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, राज्य अभिलेखागार लखनऊ, उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों व पदाधिकारियों की वास्तव में आभारी हूँ, जिन्होंने महाराजा चंद्रिका बक्स सिंह के संबंधित मूल दस्तावेज उपलब्ध कराने में अपना अथक सहयोग प्रदान किया।

मेरे अग्रज भाई तुल्य जीजा जी श्री राघवेंद्र सिंह, वारंट ऑफिसर भारतीय वायु सेना बहन श्रीमती रेखा सिंह की आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को सार्थक बनाने में अपना अमूल्य समय का योगदान एवं सहयोग दिया। बहन अंजू सिंह एवं जीजा जी अमिताभ आनंद सिंह, शमशेर सिंह भदौरिया फूफाजी एवं श्रीमती सिया सिंह बुआ जी कि मैं आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय में ना केवल मुझे अवगत कराया वरन् पग–पग पर सहयोग व सानिध्य प्रधान कर उत्साहवर्धन करते रहें।

साथ ही मैं आभार व्यक्त करती हूँ, श्री राज मोहन सिंह भदौरिया, फूफा जी का अनुज अविनाश सिंह एवं आशीष सिंह भदौरिया जो इस यात्रा में मेरे साथ रहे उनके प्रति भी मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित है। साथ ही संपूर्ण बैसवारी क्षेत्र को मैं आभार वंदना करती हूँ, जिन्होंने सहयोग दिया।

अंत में मेरी इस यात्रा के शाश्वत व अनवरत अध्ययन के लिए मेरे जीवन के प्रथम गुरु मेरे पिता स्वर्गीय श्री बजरंग सिंह एवं माता श्रीमती जीवन आशा सिंह को शत–शत नमन करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य की पूर्णता हेतु अपने साहस भरे संकल्प आदर्श व कठोर श्रम को और साथ मेरे धैर्य को बनाये रखा। जिसमें आत्मबल प्राप्त कर शांत चित्र से मैं इस कार्य को पूर्ण कर पायी। अंतूतू अथवा मेरे जीवन की यात्रा में जीवन

साथी बन कर मेरे पति श्री सत्यवीर सिंह जी की मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय–समय पर मेरा साहस बढ़ाते हुए इतना वक्त दिया कि मैं इस कार्य को नई दिशा दे पाई और बहुत ही प्यारा धन्यवाद अपनी छोटी सी बच्ची प्रज्वला कवर सिंह को जिन्होंने हमारी जिंदगी में आकर नई खुशियां देने के साथ कुछ नया करने के लिए अपनी मुस्कुराहट के साथ प्रेरित किया, साथ ही साथ में अपने समस्त परिवार अपने सास–ससुर ननंद नंदोई और समस्त बच्चों की आभारी हूँ, जो हमेशा कुछ नया करने के लिए प्रेरणा देते हैं।

अंततोगत्वा मैं अपने महाविद्यालय जहां पर में कार्यरत हूँ, बाबू जयशंकर गया प्रसाद महाविद्यालय सुमेरपुर उन्नाव एवं मैनेजर श्री दल बहादुर सिंह जी एवं समस्त शिक्षक गण और कर्मचारियों की आभारी हूँ, जो मेरे इस सफर के साथी बने ईश्वर से कामना करती हूँ, कि हिंदुस्तान के जन–जन तक यह पुस्तक पहुंचे और वह सब महाराजा चंद्रिका बक्सर सिंह के बलिदान और कार्यो से अवगत हो सके।

धन्यवाद

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

आभार

अवध में बैसवारे का स्वतंत्रता संघर्ष भारतीय इतिहास के उन भूले बिसरे पृष्ठों में है, जिनका संकलन मेरे शोधकार्य ''भारत के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष में महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह का योगदान (1857–1859)'' का विषय बना।

अंग्रेजों ने अपनी कुप्रवृत्ति–दुर्बुद्धि जन्ममनः स्थिति के साथ भारत में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया, परन्तु हमारे भारत के वीर सपूतों ने अपनी एकता, राष्ट्रीयता व शौर्यता के बूते पूरे राष्ट्र को आन्दोलित कर अंग्रेजों की अधीनता की जड़ों को हिला दिया। वास्तव में जब सत्प्रवृत्तियाँ संगठित–एकत्रित हो जाये तो दुष्प्रवृत्तियों– अनाचारों– अत्याचारों को जड़मूल से उखाड़ फेंका जा सकता है। स्वाधीनता के प्रयास में शहीद हुए इन वीर–सपूतों को, उनकी शहादत को मैं तहे दिल से वन्दना करती हूँ, जिनके अथक प्रयास से हम स्वाधीनता की साँसें ले रहे हैं।

प्रस्तुत शोध के सन्दर्भ में, मैं पूज्य गुरूवर डॉ० आलोक कुमार सिंह रीडर, इतिहास–विभाग, दयानन्द बृजेन्द्र स्वरूप महाविद्यालय, गोविन्दनगरः कानपुर की आभारी व श्रद्धावनत् हूँ, जिनके विद्वतापूर्ण कुशल दिशानिर्देशन में यह शोध–प्रबन्ध वर्तमान कलेवर को प्राप्त कर सका है। मेरी इस कठिन, दुर्गम व चुनौतीपूर्ण यात्रा को आपके ही सहयोग ने सरल बनाया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पूनम सिंह ने भी इस कार्य की पूर्णता में समय–समय पर अपना स्नेह व सानिध्य प्रदान कर मेरा मनोबल बढ़ाया।

उन्नाव के पूर्व जिलाधिकारी श्री ए०के० सिंह जी ने भी इस विषय पर अनेक दस्तावेज उपलब्ध कराने में विशेष रूचि लेकर अपना अमूल्य व सराहनीय सहयोग प्रदान कर मुझे अभिभूत किया, उनके प्रति भी मैं श्रद्धानवत् हूँ।

मैं राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ नई दिल्ली राज्य अभिलेखागार लखनऊ उत्तर–प्रदेश, के कर्मचारियों व पदाधिकारियों की वास्तव में आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय से सम्बन्धित मूल दस्तावेज उपलब्ध कराने में अपना अथक सहयोग प्रदान किया।

श्री अशोक कुमार सिंह, वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष महिला महाविद्यालय, कानपुर नगर का भी मुझे अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

मेरे अग्रज भाईतुल्य जीजाजी श्री राघवेन्द्र सिंह भदौरिया तथा अनुज भाईतुल्य ग्रजेश सिंह चौहान, अविनाश सिंह भदौरिया तथा फूफाजी डॉ० शमशेर सिंह भदौरिया के द्वारा मुझे पग–पग पर सहयोग व उत्साह वर्धन प्राप्त होता रहा। उनके प्रति भी मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित हैं।

अन्त में, मेरे इस शोध के शाश्वत् व अनवरत अध्ययन के लिए जीवन के प्रथम गुरू मेरी माता श्रीमती जीवन आशा सिंह व पिता श्री बजरंग सिंह को शत्–शत् नमन करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य की पूर्णता हेतु अपने साहस भरे संकल्प, आदर्श व कठोर श्रम के साथ मेरे धैर्य को अक्षुण्ण बनाये रखा जिससे आत्मबल प्राप्त कर शान्तचित्त से इस शोध–कार्य की पूर्णता को मैं विराम दे सकी।

रीता सिंह राठौर

17 जून, 2005.

शोधक

SAMPLE

विषय–सूची

	समर्पण	*v*
	योगदान	*xiii*
	आभार	*xvii*
	भूमिका	*xxi*
1.	बेथर स्टेट और जनपद का भौगोलिक इतिहास	1
2.	स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि	17
3.	स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख नायक	40
4.	महाराजा के नेतृत्व में प्रमुख युद्ध	51
5.	महाराजा और मुकदमा एवम् सज़ा	74
6.	उपसंहार (क्षेत्र का योगदान)	85
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	*93*
	परिशिष्ट	*100*
	चित्र	*106*

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरेशिया महाद्वीप के विभिन्न भागों में बहुत व्यापक स्तर पर विप्लव हुए। इनमें मध्य यूरोप की 1848 की क्रांतियाँ, चीन में तायपिंग विद्रोह और उत्तरी भारतवर्ष में 1857–58 की जनक्रान्ति या विद्रोह शामिल किए जा सकते हैं। इनमें कोई राजनीतिक अथवा परिस्थितिकी सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। फिर भी इनके स्वरूप, फैलाव और परिणामों में अत्याधिक समानताएँ देखने में आती हैं। ये सभी एक व्यापक लहर के रूप में उभरे तथा इनमें जनता के एक विशाल भाग ने हिस्सा लिया। कुछ समय के लिए इन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों या जनपदों में सरकारों को हिला कर रख दिया। भारतीय एवं विदेशी इतिहासकार इनमें से किसी के भी मान्य कारण नहीं दे पाए हैं। ये सभी विद्रोह तत्कालीन उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहे और सरकारें शीघ्र ही इन विद्रोहों को कठोरतापूर्वक कार्यवाहियों द्वारा दबाने में सफल हो गई। फिर भी इन विद्रोहों को अपने–अपने देशों के इतिहास में निर्णायक मोड़ माना गया है। इन सभी विद्रोहों ने जनमानस पर अमिट छाप छोड़ी।(1) सभी जगहों आने वाली पीढ़ियों ने उस समय की घटनाओं से प्रेरणा ग्रहण की। इन विद्रोहों से इन देशों के शासक वर्ग की चेतना से निचले तबकों द्वारा हिंसा का डर घर कर गया।

भारतवर्ष में महाविद्रोह का प्रारम्भ 10 मई 1857 को हुआ जब मेरठ में सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रश्न पर अपने ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला, अपने साथियों को कारागार से रिहा करवाया और दिल्ली की तरफ बढ़ निकले। दिल्ली पहुँचकर उन्होंने मुगल सम्राट बहादुरशाह को, जिनके पास मुगलों का नाम व गद्दी तो थी परन्तु सत्ता नहीं थी,

नेतृत्व प्रदान करने के लिए राजी कर लिया। शीघ्र ही बिजली की गति से एक बहुत विशाल क्षेत्र में विद्रोह होने लगे। अवध क्षेत्र में तो प्रत्येक व्यक्ति ने हथियार उठाया, यहाँ तक कि रियासतों, साधारण कृषकों ने कुदाली, खुरपी आदि से भी लड़ाई की। अंग्रेज शरणार्थी किसी गाँव के पास नहीं फटक सकते थे, ऐसा था आक्रोश उनके खिलाफ। इस क्षेत्र में अंग्रेजी राज पूर्णतः समाप्त हो गया था (2) हरियाणा से पश्चिमी बिहार तक सम्पूर्ण क्षेत्र इसकी लपेट में आ गया और भारत के अन्य भागों में भी स्थान–स्थान पर विद्रोह हुए। यह कहा जा सकता है कि यह विद्रोह सम्पूर्ण भारतवर्ष में नहीं फैला। परन्तु भारतवर्ष जैसे विस्तृत देश का यह चौथाई से थोड़ा कम भाग भी पश्चिमी यूरोप के किन्हीं भी दो देशों से क्षेत्रफल व जनसंख्या में अधिक था। इस महाविद्रोह की मुख्य विशेषता थी गहन सरकार विरोधी भावना की सक्रिय अभिव्यक्ति। स्थान–स्थान पर कम्पनी सरकार के चिह्न तक मिटा देने का प्रयास किया गया। कम्पनी सरकार को भी लगने लगा कि भारतवर्ष उनके हाथ से निकलता जा रहा है। स्वयं गवर्नर जनरल कैनिंग पुनर्विजय की बात करने लगे। परन्तु डेढ़ साल के भीतर ही जिस गति से यह फैला था उसी गति से सरकार इसे दबाने में सफल भी हो गई। सन 1860 तक शासक व शासित दोनों ही अपने–अपने कार्यों में जुट गए। परन्तु इस विद्रोह की याद कभी मिटी नहीं। इसके बाद अंग्रेज इस तथ्य के प्रति पूर्ण रूप से सजग रहे कि वे भारत पर शासन भारतीयों की इच्छा से नहीं बल्कि जबर्दस्ती बनाए हुए हैं। दूसरी ओर भारतीय इस समय दर्शाई गई वीरता और बलिदान की भावनाओं को नहीं भूले। (3)

1857–58 की घटनाओं व अनुभवों ने कम्पनी सरकार या अंग्रेजों व भारतीयों दोनों को ही हिला कर रख दिया। इस विद्रोह के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न प्रश्न उठने लगे। समाज के किस–किस वर्ग ने विद्रोह किया? क्या यह एकमात्र सैनिक विद्रोह था? विद्रोही चाहते क्या थे? इस कदर सरकार–विरोधी भावना क्यों पैदा हुई? विद्रोहियों के नेता कौन थे? क्या यह किसी षड़यंत्र का परिणाम था? इसे इतनी जल्दी कैसे दबा दिया गया?

विद्रोह के तुरन्त बाद सरकारी तौर पर केवल यह स्वीकार किया गया कि बंगाल नेटिव आर्मी ने ही विद्रोह किया जिससे न्याय व व्यवस्था बिगड़ गई। आम जनता ने इस स्थिति का लाभ उठाया जिससे दंगे फसाद हुए। परन्तु इंग्लैंड में भी तत्कालीन संवेदनशील प्रेक्षकों ने इसे केवल सैनिक विद्रोह की संज्ञा दिये जाने पर संशय प्रकट किया। उदाहरण के लिए डिजरैली व कार्ल मार्क्स दोनों ने यह तर्क दिया कि इतने विद्रोह को केवल सैनिक विद्रोह नहीं माना जा सकता और यह प्रश्न उठाया कि भारत में कहीं वे एक राष्ट्रीय विद्रोह का सामना तो नहीं कर रहे थे ? (4)

इतिहासकारों में भी 1857–58 की घटनाएँ तीखे विवाद का विषय रही हैं। वास्तव में जितना साहित्य इन घटनाओं पर लिखा गया है उतना शायद भारतवर्ष के इतिहास की किसी अन्य घटना पर नहीं लिखा गया होगा। उन्नीसवीं शताब्दी में मुख्यतः अंग्रेज लेखकों ने इस विषय पर लिखा। इनमें से जॉन के, मैलीसन, लॉरेंस तथा राइस होम्स के नाम प्रसिद्ध हुए। (5) इतिहास–लेखन के इस कार्य के पीछे इन लेखकों के उद्देश्य निष्पक्ष राय देना नहीं, बल्कि यह सिद्ध करना था कि इस विशाल क्षेत्र पर फैले विद्रोह का मूल कारण भारत सरकार की नीतियों में किसी प्रकार की मूलभूत कमियाँ अथवा अंग्रेज अधिकारियों की कमजोरियाँ नहीं थीं। इनके विचार में यह विद्रोह शासन में कुछ त्रुटियों के परिणामस्वरूप हुआ जिन्हें दूर करने से साम्राज्य की जड़ें अत्याधिक मजबूत हो सकती थीं। उन्होंने मुख्यतः सैनिक कारणों पर ही प्रकाश डाला। इसी कारण इसे 'सैनिक विद्रोह' अर्थात् 'म्यूटिनी' कहा जाने लगा। इन लेखकों ने असैनिक जनता के योगदान की या तो उपेक्षा की अथवा इसे कुछ स्वार्थी लोगों की स्वार्थपरायणता का परिणाम मानकर महत्वहीन समझा। (6)

ब्रिटिश सरकार के दमन के डर से भारतीय लेखकों ने इस विषय पर बहुत ही कम लिखा। सैयद अहमद खाँ, जिन्होंने विद्रोह के पश्चात् शीघ्र ही लिखा, तथा विनायक दामोदर सावरकर, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखा, पहले दो भारतीय थे जिन्होंने इस विषय

पर अपने विचार प्रकट किए। (7) सावरकर ने इस संघर्ष को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप मे देखा। परन्तु उनका उद्देश्य विद्रोह का इतिहास लिखना नहीं बल्कि उस समय के कारनामों पर प्रकाश डालकर अपने देशवासियों में राष्ट्रीयता तथा देश के लिए बलिदान की भावना जागृत करना था। इस पुस्तिका का प्रभाव इतना जबर्दस्त था कि ब्रिटिश काल के अन्त तक यह निषिद्ध रही।

1957 में इस विद्रोह की शताब्दी के अवसर पर कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। इनमें सुरेन्द्रनाथ सेन, रमेश चंद्र मजूमदार, शशिभूषण चौधरी तथा पूरनचंद्र जोशी की पुस्तकें अधिक महत्वपूर्ण हैं। (8) इन सभी में विद्रोह के स्वरूप पर अधिक ध्यान दिया गया है और सभी इतिहासकार मुख्यतः इस प्रश्न पर विचार करते रहे हैं कि इसे सैनिक विद्रोह माना जाना चाहिए अथवा स्वतन्त्रता के लिए युद्ध अथवा सामन्तों का विद्रोह। सेन की पुस्तक में, जो भारत सरकार के कहने पर लिखी गई, इन घटनाओं का अत्याधिक संतुलित विवरण मिलता है। इस पुस्तक में सेन यह तर्क देते हैं कि यद्यपि इसे ''राष्ट्रीय संग्राम'' नहीं कहा जा सकता, पर इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा देना भी गलत होगा, क्योंकि यह कहीं भी केवल सैनिकों तक सीमित नहीं रहा। अवध में यह एक जनांदोलन बन गया था जहाँ के देशभक्तों ने अपने राजा तथा राज्य के लिए संघर्ष किया। वे राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की भावना से पूर्णतः अनभिज्ञ थे।(9)

1957 में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में केवल शशिभूषण चौधरी की पुस्तक में जनांदोलन पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने इस महाविद्रोह में और इससे पहले के किसान विद्रोहों में सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है। किसानों में असन्तोष का मूल कारण यह था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी की भू–लगान व्यवस्था के अन्तर्गत लगान बहुत अधिक नियत किया गया जिसकी अदायगी न होने पर विस्तृत स्तर पर बेदखली हुई थी। इसके साथ–ही–साथ लोगों को अपनी संस्कृति व तौर–तरीकों के लिए खतरा दिखाई देने लगा था। चौधरी ने इन विद्रोहों को, जैसा कि उनकी पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है, ''गैर–सैनिक उपद्रवों'' (Civil-rebellions) की संज्ञा दी है। (10)

जिस प्रकार प्रारम्भ में अंग्रेज इतिहासकारों ने इस महाविद्रोह को 'म्युटिनी' अर्थात् 'सैनिक विद्रोह' कहा उससे भारत के इतिहास में 'म्युटिनी' शब्द 1857–58 की घटनाओं का पर्याय बन गया है। परन्तु सैनिकों के अलावा जनता के शेष भाग ने, जिसमें जमींदार, रियासत व किसान अधिक थे, इसमें बढ़–चढ़ कर भाग लिया था। इस प्रकार 1857 का विद्रोह पश्चक्षेत्र में (अर्थात् उन क्षेत्रों में जो ग्रैंड ट्रंक रोड या बड़ी रेल लाइन से हटकर पड़ते थे) अधिक उग्र रहा। इतने शोधकार्य के बावजूद आज भी यह कहना अत्यन्त कठिन है कि इस महाविद्रोह में घटनाक्रम क्या था? इसमें किस–किस ने, क्यों, कब और कैसे भाग लिया? शोधकार्य अभी जारी है।

दासता की श्रृंखलाओं से भारतीय जनता के हाथ पैर लड़खड़ाने लगे थे। दिग्भ्रान्ति से जनता पथ–विहीन थी। शनैः–शनैः भारतीयों में आत्म बोध हुआ, जन जागृति हुई। देश के विचारकों, साहित्यकारों, लेखकों, राजनीतिज्ञों के मस्तिष्कों में जनता को अग्रसर होने का सम्बल मिला। देश के शक्तिशाली अतीत एवं अपने पूर्वजों के वैभव के स्मरण ने आग मे घी का कार्य किया। निःसन्देह भारतीय स्वतन्त्रता की कहानी बहुआयामी है। जो अनेक धाराओं व प्रवाहों वाली एक ऐसी अथाह नदी है। जिसकी गहराई में उतरकर तिनका–तिनका एकत्र कर पाना अत्यन्त दुःष्कर है। इन तिनकों को चुनते समय कुछ छूट जाने की त्रुटि होना स्वाभाविक है। आने वाले समय में हो सकता है इस त्रुटि की पूर्ति अन्य किसी के द्वारा सम्भव हो।

भारतवर्ष का इतिहास हमारी विरासत का वैज्ञानिक लेखा–जोखा है। इतिहास लेखन–देश–काल और जाति या वर्ग के बन्धन से दूर रहकर निष्पक्ष और ईमानदारी पूर्ण प्रयास से घटनाओं का सही चित्रण प्रस्तुत करता है। इसी ध्येय को लेकर मैंने अपने शोध–प्रबन्ध ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह का योगदान'', (1857–1859) की इस अल्प अवधि की प्रत्येक घटनाओं को यथा सम्भव लिपिबद्ध करने का सफल प्रयास किया है। महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह एक ऐसी महान शख्शियत का नाम है जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया और इस महासमर में प्रवेश किया।

महाराजा भारतीय इतिहास के उन प्रमुख नायकों में से एक हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर तो किया परन्तु उनके द्वारा किये गये त्याग व योगदान को राजनीति की परतों से दबा दिये जाने के कारण इतिहासकारों की पैनी निगाहों से महाराजा का व्यक्तित्व अछूता रह गया है। महाराजा आसमान के उन सितारों में से हैं, जिन्हें आसमान की काली घटाओं ने छुपा लिया और उनकी शख्शियत को ढूंढ़ने के लिए हमें राजनीति की उन परतों को परत–दर–परत उठाना होगा अथवा घटाओं के छँटने की प्रतीक्षा भी करनी होगी। प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान मैंने इन घटाओं के छँटने की प्रतीक्षा भी की है और राजनीति की परतों को क्रमशः हटाने का दुर्गम प्रयास भी किया है क्योंकि इनका स्वतन्त्रता संघर्ष में सम्पूर्ण योगदान होते हुए भी तत्कालीन सूचनावेत्ताओं एवं इतिहासकारों की तरफ से उपेक्षित हो जाने के कारण ही यह मेरे शोधकार्य का महत्वपूर्ण विषय बना।

यह शोधकार्य भारतीय इतिहास के अल्पकाल (1857–1859) लगभग दो वर्षों का इतिहास, किन्तु महत्वपूर्ण काल खण्ड के घटनाचक्र की विवेचना करने का प्रयास मात्र है – बलिदानों की पावन स्मृति स्थल बैसवाड़ा और बेथर रियासत के कितने ही वीर भक्तों ने मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने प्राणों को हँसते–हँसते चढ़ा दिया। कितनी ही माताओं ने अपनी गोद की शोभा, कितनी ही पत्नियों ने अपनी माँग का सिन्दूर तथा कितनी ही बहनों ने अपनी रक्षा–बन्धन के त्यौहार को सहर्ष स्वतन्त्रता संघर्ष को भेंट कर दिया। संघर्ष के दौरान सम्पूर्ण रियासत आन्दोलित थी। महाराजा स्वतन्त्रता संघर्ष के उन महान सेनापतियों में प्रमुख थे, जिनके मार्गदर्शन पर चलकर रियासत के हजारों लोग रण–क्षेत्र में कूद पड़े थे और उन्होंने हर प्रकार का बलिदान करके स्वतन्त्रता–संघर्ष को यादगार बना दिया। इन वीर नायकों की भीड़ में कितने ही नायक इतिहास के अतीत में खो गये। इन्ही नायकों में बेथर रियासत के महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह हैं। जिनकी शहादत की गवाह के रूप में रियासत के खण्डहर दुर्ग आज बेकद्री की मिसाल बन गये हैं। ये वो शहीद हैं जिनके बेथर रियासत में निशान भी हैं। (11) पुख्ता सबूत भी हैं, सरकारी अभिलेखों में उपलब्ध होने के बावजूद इनका नाम

गुमनाम ही रह गया है। हैरत तो सिर्फ इस बात की है कि सम्पूर्ण साक्ष्य सरकारी अभिलेखों में उपलब्ध होने के बावजूद न तो किसी राजनेता और न ही किसी भी इतिहासकार ने आज तक इस स्वतन्त्रता सेनानी को भारतीय इतिहास में यथोचित स्थान दिलाने का सार्थक प्रयास किया है। (12)

लगभग एक सौ तीस वर्षों तक काल के गाल में छिपा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इस महान सेनानी का रहस्य सब पर जाहिर होने के लिए ही अब शायद मेरे शोधकार्य का मुख्य पात्र बना है। महाराजा से जुड़े कुछ विस्मृत स्मारक उतने ही विस्मृत हो चले हैं, जितनी उनकी कुर्बानी। अंग्रेजों द्वारा किया गया महाराजा का तिरस्कार तो समझा जा सकता है किन्तु हम लोगों ने किस कारण से अन्याय किया यह समझ में नहीं आता है।

राजस्थान और बुन्देलखण्ड की भाँति बैसवाड़ा क्षेत्र (रियासत – बेथर, बेहटा, जाजमऊ और बाँगरमऊ) भी अपने गौरवमय अतीत के कारण उत्तरी भारत में विशिष्ट स्थान बनाये हुये हैं। यहाँ के सपूतों की गाथाएं अवध की लोरियों, ग्राम्य गीतों और लोक कथाओं में सजाई हुई हैं। राष्ट्रीय– स्वतन्त्रता के प्रायः प्रत्येक संग्राम में इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान सराहनीय रहा है। प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में महाराजा चन्द्रिका बक्स सिंह के योगदान की स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी सराहना की थी। (13) इन्हीं समस्त कारणों से मुझमें इस क्षेत्र का इतिहास लिखने की इच्छा जागृत हुई। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बेथर में उन स्मृति अवशेषों का मैंने स्वयं ही अवलोकन किया जो मूल स्वर में ही अपनी कहानी बयाँ कर रहे हैं।

मेरी बेथर यात्रा के दौरान ही एक ऐसे व्यक्ति से साक्षात्कार हुआ जिसके प्रपितामह मैकूलाल महाराजा के माली हुआ करते थे। आजकल उनकी आयु 85 वर्ष की हो गई है। श्यामलाल ने बचपन में देखी–सुनी घटनाओं व संस्मरण से मुझे अवगत कराया। इस आधार पर मैंने सरकारी व अर्धसरकारी दस्तावेजों में अपनी खोज शुरू की। इस महत्वपूर्ण घटना के नायक जो कि आज हमारे बीच नहीं हैं, उनके

रियासत के ग्रामवासियों से बात करके उनके योगदान को रेखांकित और स्थापित करने का विनम्र प्रयास मैंने किया है। महाराजा के योगदान को भारतीय इतिहास की गहराई में उतरते समय सरकारी दस्तावेजों के उन पन्नों को जितनी बार पलटा, हर बार कुछ नये पहलू उभरकर सामने आये।

भारतवर्ष के आधुनिक उत्तर–प्रदेश राज्य को ब्रिटिश शासन काल में 'संयुक्त–प्रान्त', 'युक्त–प्रान्त' अथवा 'यूनाइटेंड प्रोविन्सेन्स ऑफ आगरा एण्ड अवध' कहा जाता था, क्योंकि वह मुगलकालीन आगरा और अवध के दो सूबों को मिलाकर बनाया गया था। 1837 ई० के एक गजेटियर के अनुसार (14) उस समय सम्पूर्ण अवध राज्य जिन बारह चकलों में विभाजित था, उनमें से एक बैसवाड़ा था। बैसवाड़ा में ही बेथर रियासत थी। (15) उस समय अवध का वह दक्षिणी भूभाग जो गोमती और गंगा के मध्य $26^{o}8'$ उत्तरी अक्षांश से लगभग 27^{o} उत्तरी आक्षांश तक तथा लगभग $80^{o}34'$ पूर्वी देशान्तर से $81^{o}18'$ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है, बैसवाड़ा के नाम से विख्यात था। (16)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह क्षेत्र उत्तर–प्रदेश में गंगा के अधोभाग में उन्नाव जिला अवस्थित है। यह आकार समचतुर्भज है। इसका विस्तार $26^{o}8'$ और $27^{o}2'$ के उत्तर आक्षांशों और $80^{o}3'$ और $81^{o}3'$ देशान्तर रेखाओं के अन्तर्गत है। बेथर उन्नाव से 18 किलोमीटर पूरब उन्नाव–रायबरेली सड़क मार्ग पर अवस्थित है। (17) सन 1856 में उन्नाव जिला घोषित किया गया। ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र कोशल राज्य का एक अंग रहा, वहीं अठारहवीं शताब्दी में अवध प्रान्त में समाहित रहा। गर्ग मुनि तथा ऋषि वाल्मीकि की तपस्थली, मर्यादा पुरूषोत्तम राम के उत्तराधिकारी लव कुश ने इस पुण्य भूमि में जन्म लेकर इस भूमि को धन्य कर दिया, बौद्धकालीन बस्तियों के अवशेष, तथा चीनी यात्री फहियान के सन्दर्भ इस बात के प्रमाण हैं यह क्षेत्र Northern black Polished Ware (1000 BC) तथा Printed Grey Ware (800 BC) के काल में गतिमान रहा था किन्तु पुरातात्विक खुदाई आदि के अभाव में इस काल का योगदान अभी तक अन्वेषित नहीं किया जा सका